सैंपल प्रश्नपत्र –5 (हल सहित)

सी.बी.एस.ई. द्वारा जारी नवीनतम प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र पर आधारित

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश : निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए।

- इस प्रश्न पत्र में दो खंड हैं– खंड 'अ' और 'ब'
- खंड 'अ' में कुल 9 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों में उपप्रश्न दिए गए हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
- खंड 'ब' में कुल 8 वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड – 'अ' : वस्तुपरक-प्रश्न

अपठित गद्यांश

[10 अंक]

1. नीचे दो गद्यांश दिए गए हैं। किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प चुनकर लिखिए। **(1×5 = 5)**

गद्यांश-1

यदि आप इस गद्यांश का चयन करते हैं तो कृपया उत्तर-पुस्तिका में लिखिए कि आप प्रश्न संख्या 1 में दिए गए गद्यांश-1 पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिख रहे हैं।

कहा जाता है कि यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात का मुख सौंदर्य विहीन था। किन्तु उनके विचारों में अत्यंत प्रबल सुंदरता थी, अतः लोग उन्हें बहुत पसंद करते थे। एक बार वे अपने शिष्यों के साथ बैठे हुए थे, तभी एक ज्योतिषी वहाँ आया। वह सुकरात को जानता नहीं था। उसने सुकरात का चेहरा देखकर बताया कि तुम्हारे नथुनों की बनावट बता रही है कि तुममें क्रोध की भावना अत्यंत प्रबल है। यह सुनकर सुकरात के शिष्य नाराज हुए, किन्तु सुकरात ने उन्हें रोक लिया। ज्योतिषी ने आगे बताया कि तुम्हारे सिर की आकृति तुम्हारे लालची होने का प्रमाण दे रही है, ठुड्डी की बनावट से तुम सनकी और होठों से तुम देशद्रोह के लिए तत्पर प्रतीत होते हो। यह सुनकर सुकरात ने ज्योतिषी को पुरस्कार दिया। सुकरात के शिष्यों ने इसका कारण पूछा तो सुकरात ने स्पष्ट किया कि ये सारे दुर्गुण मुझमें हैं किन्तु ज्योतिषी मुझमें स्थित विवेक की शक्ति को न देख सका जिसके कारण मैं इन सभी दुर्गुणों को नियंत्रण में रखता हूँ। हर इंसान को अपने भीतर स्थित विवेक को जाग्रत कर सदैव दुर्गुणों को काबू में रखना चाहिए।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए–

(क) सुकरात किस देश के निवासी थे?

(*i*) भारत (*ii*) नेपाल (*iii*) ईरान (*iv*) यूनान

उत्तर: (*iv*) यूनान

(ख) सुकरात देखने में कैसे थे?

(*i*) सौंदर्य युक्त (*ii*) ठीक ठाक (*iii*) सौंदर्य विहीन (*iv*) कुरूप

उत्तर: (*iii*) सौंदर्य विहीन

(ग) ज्येतिषी ने उनके नथुनों को देखकर क्या कहा?

(*i*) वे क्रोधी हैं (*ii*) वे संकोची हैं (*iii*) वे लालची हैं (*iv*) वे सनकी हैं

उत्तर: (*i*) वे क्रोधी हैं

(घ) ज्योतिषी की बात सुनकर सुकरात ने उसके साथ क्या किया?

(*i*) उनको भला-बुरा कहा (*ii*) उनको भगा दिया

(*iii*) उनको फाँसी पर लटका दिया (*iv*) उनको पुरस्कार दिया

उत्तर: (*iv*) उनको पुरस्कार दिया

(ङ) 'दुर्गुण' में कौन-सा समास है?

(*i*) तत्पुरुष (*ii*) अव्ययीभाव (*iii*) कर्मधारय (*iv*) द्वंद्व

उत्तर: (*iii*) कर्मधारय

अथवा

गद्यांश-2

यदि आप इस गद्यांश का चयन करते हैं तो कृपया उत्तर-पुस्तिका में लिखिए कि आप प्रश्न संख्या 1 में दिए गए गद्यांश-2 पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिख रहे हैं।

जब रात के समय खुले आसमान की ओर हमारी आँखें उठ जाती हैं तो टिमटिमाते तारों को एकटक निहारने लगती हैं। मन उनमें ही खो जाता है। ऐसा लगता है कि जैसे ये सभी तारे किसी बड़े से गोले पर बिखरे हैं और इनकी दूरी भी एक समान है। इसी आधार पर भारतीय खगोल विज्ञानियों ने इसे नक्षत्र लोक का नाम दे दिया। इसी अनुमान के आधार पर अमीर-खुसरो ने इस पहेली की रचना भी कर डाली– 'एक थाल मोती भरा सबके सिर औंधा पड़ा।' इस पहेली को तो हम और आप कई बार हल कर चुके हैं। आज हम जानते हैं कि उनकी यह बात सही नहीं थी क्योंकि न तो कोई गोल है, न ही सभी तारे एक समान दूरी पर हैं। हाँ कुछ तारे हमसे बहुत दूर हैं तो कुछ बहुत पास। हमारी दृष्टि में सूर्य बड़ा एवं अधिक प्रकाशमान तारा है किन्तु ऐसा नहीं है यह तो पृथ्वी के निकट है इसलिए यह हमें अधिक प्रकाशमान प्रतीत होता है। आकाशगंगा में अनेक तारे सूर्य से कई गुना बड़े हैं। इन्हें महादानव कहा जाता है एवं जो तारे पृथ्वी तथा बुध ग्रह से भी छोटे हैं उन्हें श्वेत मानव या बौने तारे कहा जाता है।

(क) गद्यांश में आई पहेली की रचना किसने की?

(*i*) अध्यापक ने (*ii*) अमीर बुसरो ने (*iii*) गालिब ने (*iv*) अमीर खुसरो ने

उत्तर: (*ii*) अमीर खुसरो ने

(ख) तारों की दुनिया को भारतीय खगोल विज्ञानियों ने क्या नाम दे दिया?

(*i*) आकाश मंडल (*ii*) ध्रुव मंडल (*iii*) पाताललोक (*iv*) नक्षत्र लोक

उत्तर: (*iv*) नक्षत्र लोक

(ग) सूर्य कैसा तारा है?

(*i*) बड़ा (*ii*) अधिक प्रकाशमान (*iii*) (*i*) और (*ii*) दोनों (*iv*) चमकीला

उत्तर: (*iii*) (*i*) और (*ii*) दोनों

(घ) जो तारे पृथ्वी तथा बुध ग्रह से भी छोटे हैं उन्हें क्या नाम दिया गया है?

(*i*) महादानव (*ii*) काला मानव (*iii*) श्वेत मानव (*iv*) बौना मानव

उत्तर: (*iii*) श्वेत मानव

(ङ) गद्यांश का उचित शीर्षक चुनिए–

(*i*) तारामंडल (*ii*) आसमान की सैर (*iii*) आंतरिक तारा (*iv*) अमीर खुसरो

उत्तर: (*i*) तारामंडल

2. नीचे दो गद्यांश दिए गए हैं। किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प चुनकर लिखिए। **(1×5 = 5)**

गद्यांश-1

यदि आप इस गद्यांश का चयन करते हैं तो कृपया उत्तर-पुस्तिका में लिखिए कि आप प्रश्न संख्या 2 में दिए गए गद्यांश-1 पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिख रहे हैं।

हर व्यक्ति के जीवन में एक बार तो ऐसा समय आता ही है जब उसे लगने लगता है कि सारी चीज़ें विरोध में हैं. वह किसी के लिए कितना भी अच्छा सोचे, सामने वाले को गलत ही लगेगा। वह कितनी भी मेहनत कर ले उसे असफलता ही मिलेगी। ऐसे समय में उसके मस्तिष्क में नकारात्मक विचार ही घुमड़ते रहते हैं। जो निरंतर अविश्वास की बारिश करते हैं तथा निराशा में डुबो देते हैं। इस परिस्थिति में मनुष्य को सरल मार्ग दिखाई देता है आत्महत्या का। किन्तु आत्महत्या कर जीवन को विराम देना कोई समाधान नहीं है। यदि ऐसी स्थिति में कोई आगे बढ़कर हाथ थाम ले, कोई सहारा दे तो हो सकता है

कि जीवन से निराश व्यक्ति का जीवन भी प्रकाशित हो जाए और ऐसा व्यक्ति अवसाद से मुक्त हो इतना बड़ा कार्य करे कि इतिहास ही रच दे, और लोग दाँतों तले अँगुली दबा लें। कहने का तात्पर्य है कि यदि हम किसी हताश-निराश व्यक्ति को प्रेरित करते हैं तो उसका मनोबल बढ़ता है। उसका आत्मविश्वास जाग जाता है और यहीं से आरंभ होता है असंभव को संभव कर दिखाना। देखा जाए तो हर व्यक्ति की अपनी क्षमताएँ एवं सीमाएं होती हैं, किन्तु विपरीत परिस्थिति होने पर उसे अपनी ही शक्ति पर अविश्वास-सा होने लगता है। ऐसे में उसका मनोबल डगमगाने लगता है, इस स्थिति में थोड़ी सी प्रेरणा ही उसे उत्साहित कर देती है। इस बात को हम ऐसे भी समझ सकते हैं कि जब सबको पता लग चुका था कि सीता जी को लंका का राजा रावण अपहरण कर समुद्र पार कर लंका ले गया है तब भी लंका जाकर सीता जी को ढूँढ़ने का कार्य अथाह समुद्र को पार कौन करे, किसमें है इतना साहस। यह विकट समस्या थी। इस विकट समस्या का समाधान जामवंत ने ढूँढ़ निकाला। उन्होंने हनुमान जी को यह कार्य करने हेतु प्रेरित किया एवं उनमें सोई हुई शक्ति का अहसास दिलाया। हनुमान जी को भी अपने पर भरोसा हुआ और उन्होंने राम-नाम लेते हुए समस्त कार्य पूर्ण कर डाले।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए–

(क) व्यक्ति के मन में नकारात्मक विचार कब आते हैं?

(*i*) जब सार चीज़ें विरोध में हो (*ii*) सब कुछ सही हो
(*iii*) सभी साथ हो (*iv*) इनमें से कोई विकल्प नहीं

उत्तर: (*i*) जब सार चीज़ें विरोध में हो

(ख) नकारात्मक विचार आने पर व्यक्ति को कौन-सा मार्ग दिखाई देता है?

(*i*) आत्महत्या का (*ii*) कार्य करने का (*iii*) भाग जाने का (*iv*) चले जाने का

उत्तर: (*i*) आत्महत्या का

(ग) निराशा को व्यक्ति कैसे दूर कर सकता है?

(*i*) स्वयं पर विश्वास करके (*ii*) अपना आत्मविश्वास बढ़ाकर
(*iii*) महापुरुषों से प्रेरणा लेकर (*iv*) सभी विकल्प सही हैं

उत्तर: (*iv*) सभी विकल्प सही हैं

(घ) गद्यांश का उचित शीर्षक बताएँ।

(*i*) विश्वास (*ii*) आत्मविश्वास (*iii*) निराशा (*iv*) आशा की किरण

उत्तर: (*ii*) आत्मविश्वास

(ङ) आत्मविश्वास में कौन-सा समास है?

(*i*) तत्पुरुष (*ii*) द्वंद्व (*iii*) द्विगु (*iv*) अव्ययीभाव

उत्तर: (*iv*) तत्पुरुष

अथवा

गद्यांश-2

यदि आप इस गद्यांश का चयन करते हैं तो कृपया उत्तर-पुस्तिका में लिखिए कि आप प्रश्न संख्या 2 में दिए गए गद्यांश-2 पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिख रहे हैं।

पुस्तकें सच्ची मित्र होती हैं। अब तक मैं यही समझता था। परंतु उस दिन मेरी यह धारणा भी टूट गई। मैंने एक ऐसी पुस्तक पढ़ी जिसमें घृणा और द्वेष भरा हुआ था। लेखक महोदय किसी विशेष विचारधारा से बंधे हुए जान पड़ते थे, जैसे जंजीरों में जकड़ा हुआ कैदी दाँत पीस-पीस कर हर अपने जानने वाले को गाली ही देता है उसी प्रकार लेखक महोदय को अपने समाज में सारे लोग शोषक जान पड़ते थे। लेखक को यदि कोई कार में सवारी करता सोचा, वह नफरत के योग्य लगा, जो मंदिर में जाता हुआ मिला वह मूर्ख लगा, जो संस्कारों की बातें करता, वह ढोंगी जान पड़ा। जो संस्कृति और मर्यादा की बात करता, वह शोषक प्रतीत हुआ। उसकी नज़रों में सच्चा इंसान वही है जो व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ उठाए। चाहे व्यवस्था उसे सभी सुविधाएँ दे रही हो फिर भी उसमें कमियाँ निकाले। अपने मालिक को, रोज़गार देने वालों को अत्याचारी समझे। उसके विरुद्ध समय-समय पर संघर्ष की आवाज़ उठाता रहे, हड़ताल और तालाबंदी करता रहे, नारे लगाता रहे, झंडा उठाता रहे। ऐसा लगता है कि लेखक के जीवन का लक्ष्य भी मात्र यही था– निरंतर संघर्ष। सच कहूं तो ऐसी पुस्तक पढ़कर मैं शांत नहीं रह पाया। मेरे मन में खलबली मच गई और अशांति की प्राप्ति हुई।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए–

(क) अपठित गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए–

(*i*) मन की कुंठा (*ii*) मन की प्रसन्नता (*iii*) पुस्तकें पढ़ना (*iv*) विचारधारा

उत्तर: (*i*) मन की कुंठा

(ख) लेखक के जीवन का लक्ष्य क्या मालूम पड़ता था?

(*i*) पढ़ना (*ii*) लिखना (*iii*) भागना (*iv*) निरंतर संघर्ष

उत्तर: (*iv*) निरंतर संघर्ष

(ग) पुस्तक पढ़कर पाठक के मन पर क्या प्रभाव पड़ा?

(*i*) पाठक प्रसन्न हो गया। (*ii*) पाठक नाच उठा।

(*iii*) पाठक का मन अशांति से भर गया। (*iv*) इनमें से कोई विकल्प नहीं।

उत्तर: (*iii*) पाठक का मन अशांति से भर गया।

(घ) लेखक की नज़रों से सच्चा इंसान कौन है?

(*i*) जो अमीर हो (*ii*) जो दयालु हो

(*iii*) जो व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ उठाए (*iv*) हर हाल में जीना सीखें

उत्तर: (*iii*) जो व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ उठाए

(ङ) रेखांकित वाक्य का प्रकार बताइए। (रचना के आधार पर)

(*i*) सरल (*ii*) संयुक्त (*iii*) मिश्र (*iv*) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (*iii*) मिश्र

व्यावहारिक व्याकरण

[16 अंक]

3. निम्नलिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए– (1×4=4)

(क) <u>तकदीर का मारा यह</u> आपके सामने खड़ा है।– रेखांकित पदबंध का भेद है–

(*i*) संज्ञा पदबंध (*ii*) सर्वनाम पदबंध (*iii*) क्रिया पदबंध (*iv*) विशेषण पदबंध

उत्तर: (*ii*) सर्वनाम पदबंध

(ख) <u>वासुदेव पुत्र कृष्ण</u> ने मथुरा में जन्म लिया।– रेखांकित पदबंध का भेद है–

(*i*) संज्ञा पदबंध (*ii*) सर्वनाम पदबंध (*iii*) क्रिया पदबंध (*iv*) विशेषण पदबंध

उत्तर: (*i*) संज्ञा पदबंध

(ग) लड़का डर के मारे सड़क पर <u>भागता रहा</u>।– रेखांकित पदबंध का भेद है–

(*i*) संज्ञा पदबंध (*ii*) सर्वनाम पदबंध (*iii*) क्रिया पदबंध (*iv*) विशेषण पदबंध

उत्तर: (*iii*) क्रिया पदबंध

(घ) <u>नल का पानी</u> तेज़ गति से बह रहा है।– रेखांकित पदबंध का भेद है–

(*i*) संज्ञा पदबंध (*ii*) सर्वनाम पदबंध

(*iii*) क्रिया पदबंध (*iv*) क्रियाविशेषण पदबंध

उत्तर: (*i*) संज्ञा पदबंध

(ङ) <u>प्रतियोगिता में भाग लेने वाले</u> व्यक्ति को पुरस्कृत किया जाएगा।– रेखांकित पदबंध है–

(*i*) क्रियाविशेषण पदबंध (*ii*) सर्वनाम पदबंध

(*iii*) क्रिया पदबंध (*iv*) विशेषण पदबंध

उत्तर: (*iv*) विशेषण पदबंध

4. निम्नलिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए– (1×4=4)

(क) 'चाय पीने की यह एक विधि है।' जापानी में इसे चा-ना-यू कहते हैं। (सही संयुक्त वाक्य कौन-सा होगा।)

(*i*) जापानी में चाय पीने के विधि को चा-नो-यू कहते हैं।

(*ii*) चाय पीने की यह एक विधि है और इसे जापानी में चा-या-नू कहते हैं।

(*iii*) चाय पीने की यह एक विधि है जिसे जापानी में चा-नो-यू कहते हैं।

(*iv*) जापानी चाय पीने की विधि को चा-नो-यू कहते हैं।

उत्तर: (*ii*) चाय पीने की यह एक विधि है और इसे जापानी में चा-या-नू कहते हैं।

(ख) विद्वान का सब आदर करते हैं। (मिश्र वाक्य का सही रूपांतरण चुनिए।)

(*i*) जो विद्वान होते हैं उनका सब आदर करते हैं।

(*ii*) विद्वानों का सब आदर करते हैं।

(*iii*) विद्वानों का सभी जगह आदर होता है।

(*iv*) वह विद्यालय है और सब उनका आदर करते हैं।

उत्तर: (*i*) जो विद्वान होते हैं उनका सब आदर करते हैं।

(ग) जो गुणी होता है, उसे सभी चाहते हैं। (वाक्य का प्रकार बताइए।)

(*i*) सरल (*ii*) संयुक्त (*iii*) मिश्र (*iv*) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (*iii*) मिश्र

(घ) वर्षा होते ही चारों ओर पानी भर गया। (वाक्य का प्रकार बताइए।)

(*i*) सरल (*ii*) संयुक्त (*iii*) मिश्र (*iv*) विचान वाचक

उत्तर: (*i*) सरल

(ङ) निम्न वाक्यों में मिश्र वाक्य को चिह्नित कीजिए।

(*i*) रीना बहुत परेशान थी लेकिन उसने साहस नहीं छोड़ा।

(*ii*) क्योंकि रीना बहुत परेशान थी तो भी उसने साहस नहीं छोड़ा।

(*iii*) रीना ने परेशान होने पर भी साहस नहीं छोड़ा।

(*iv*) रीना परेशान थी तो भी उसने साहस नहीं छोड़ा।

उत्तर: (*iv*) रीना परेशान थी तो भी उसने साहस नहीं छोड़ा।

5. निम्नलिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए– (1×4=4)

(क) दया से आर्द्र का समस्तपद है–

(*i*) द्यारद्र (*ii*) द्याआर्द्र (*iii*) द्योर्द्र (*iv*) दयार्द्र

उत्तर: (*iv*) दयार्द्र

(ख) किस समस्तपद में बहुव्रीहि समास है?

(*i*) चतुर्मुख (*ii*) महामंत्री (*iii*) पंजाब (*iv*) राजकुमार

उत्तर: (*i*) चतुर्मुख

(ग) द्विगु समास है–

(*i*) शताब्दी (*ii*) राधा-श्याम (*iii*) रसोईघर (*iv*) चंद्रमुखी

उत्तर: (*i*) शताब्दी

(घ) किस समास में पूर्व पद और उत्तर पद दोनों ही प्रधान होते हैं?

(*i*) द्विगु (*ii*) कर्मधारय (*iii*) द्वंद्व (*iv*) अव्ययीभाव

उत्तर: (*iii*) द्वंद्व

(ङ) नीलांबर का विग्रह कीजिए।

(*i*) नील का अंबर (*ii*) नीला और अंबर (*iii*) नील और अंबर (*iv*) नीला है जो अंबर

उत्तर: (*iv*) नीला है जो अंबर

6. निम्नलिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए– (1×4=4)

रिक्त स्थान में मुहावरा भरिए।

(क) तताँरा शाम से ही वामीरो की ..... लगा।

(*i*) बाट जोहने (*ii*) चक्कर लगाने (*iii*) रंग दिखाने (*iv*) नज़र रखने

उत्तर: (*i*) बाट जोहने

(ख) भिखारी को देखकर मेरा ..... गया।

(*i*) तूती बोलना (*ii*) दिल पसीजना (*iii*) फरार होना (*iv*) चंपत होना

उत्तर: (*ii*) दिल पसीजना

(ग) 'थोड़े शब्दों में अधिक कहना' किस मुहावरे का अर्थ है?

(*i*) कम बोलना (*ii*) वाचाल होना (*iii*) गागर में सागर (*iv*) खुला चेलेंज देना

उत्तर: (*iii*) गागर में सागर

(घ) 'डंका बजाना' का अर्थ क्या होगा?

(*i*) बढ़-चढ़ कर बाते करना (*ii*) टालमटोल करना

(*iii*) इनकार कर देना (*iv*) प्रभाव जमाना

उत्तर: (*iv*) प्रभाव जमाना

पाठ्य-पुस्तक

[14 अंक]

7. दिए गए पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए– **(1×4=4)**

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु-प्रवृति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

(क) कवि ने मनुष्यता के लिए क्या संदेश दिया है?

(*i*) परोपकार और अच्छे कर्म ही मनुष्यता की पहचान हैं। (*ii*) अपना भला करना मनुष्य का काम है।

(*iii*) अपनो का ध्यान रखना मनुष्य का काम है। (*iv*) ईश्वर का स्मरण करने का।

उत्तर: (*i*) परोपकार और अच्छे कर्म ही मनुष्यता की पहचान है।

(ख) कवि ने किसकी मृत्यु को सुमृत्यु माना है?

(*i*) परोपकारी व्यक्ति की (*ii*) पढ़े-लिखे व्यक्ति की

(*iii*) अमीर व्यक्ति की (*iv*) ज्ञानी की

उत्तर: (*i*) परोपकारी व्यक्ति की

(ग) उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?

(*i*) उसके चेहरे से (*ii*) उसके महँगे कपड़ों से

(*iii*) उसकी गाड़ी से (*iv*) उसके परोपकारी एवं विनम्र व्यवहार से

उत्तर: (*iv*) उसके परोपकारी एवं विनम्र व्यवहार से

(घ) इस कविता में, कवि किन मनुष्यों को महान मानते हैं?

(*i*) परोपकारी मनुष्यों को (*ii*) अपना भला करने वाले मनुष्य को

(*iii*) अपने रिश्ते-नातों का भला करने वालों को (*iv*) सभी को

उत्तर: (*i*) परोपकारी मनुष्यों को

8. दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए– **(1×5=5)**

दुनिया कैसे अस्तित्व में आई? पहले यह दुनिया क्या थी? किस बिन्दु से दुनिया के बनने की यात्रा शुरू हुई? इन सभी प्रश्नों के उत्तर विज्ञान अपनी तरह से देता है और सभी जितने भी धार्मिक ग्रंथ हैं वो अपनी-अपनी तरह से देते हैं।

इन प्रश्नों के सही उत्तर किसी को पता चले या न चले लेकिन यह बात सही है कि धरती किसी एक की नहीं है। जितने भी जीवधारी इस धरती पर रहते हैं; जैसे पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर-इन सभी का धरती पर बराबर का अधिकार है। यह बात है कि अपने आप को बुद्धिमान बताने वाला मनुष्य धरती को अपनी निजी जायदाद समझ कर दूसरों के लिए बड़ी-बड़ी दीवारे खड़ी कर रहा हैं। पहले पूरा संसार एक परिवार समान था, अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चूका है। पहले बड़े-बड़े दालानों-आँगनों में सब मिल-जुलकर रहते थे अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में जीवन सिमटने लगा है। बढ़ती हुई आबादी ने समंदर को पीछे सरकाना शुरू कर दिया है, पेड़ों को रास्तों से हटाना शुरू कर दिया है। फैलते हुए प्रदूषण ने पंछियों को बस्तियों से भगाना शुरू कर दिया है। बारूदों की विनाशलीलाओं ने वातावरण को सताना शुरू कर दिया। अब गरमी में ज़्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, जलजले, सैलाब, तूफ़ान, और नित नए रोग, मानव और प्रकृति के इसी असंतुलन के प्रमाण हैं।

(क) समुद्र धीरे-धीरे क्यों सिकुड़ रहे हैं?

(*i*) क्योंकि उसकी ज़मीन पर इमारतें और मकान खड़े हो गए।
(*ii*) क्योंकि बारिश कम हुई।
(*iii*) क्योंकि पानी कम हो गया।
(*iv*) ग्लोबल वार्मिंग के कारण।

उत्तर: (*i*) क्योंकि उसकी ज़मीन पर इमारतें और मकान खड़े हो गए।

(ख) विज्ञान के अनुसार धरती कैसे वजूद में आई?

(*i*) क्रमिक विकास से
(*ii*) चमत्कार से
(*iii*) ईश्वर की कृपा से
(*iv*) विभिन्न कारणों से

उत्तर: (*i*) क्रमिक विकास से

(ग) प्रकृति में आए असंतुलन के क्या परिणाम हैं?

(*i*) गर्मी में अधिक गर्मी (*ii*) असमय वर्षा होना (*iii*) दोनों (*iv*) कोई नहीं

उत्तर: (*iii*) दोनों

(घ) मनुष्य ने अपनी बुद्धि से क्या खड़ा किया है?

(*i*) सद्भाव
(*ii*) स्वभाव
(*iii*) भेदभाव और ऊँची दीवारें
(*iv*) दीवारें

उत्तर: (*iv*) दीवारें

(ङ) पहले पूरा संसार किसके जैसा था?

(*i*) एक देश (*ii*) एक परिवार (*iii*) एक मन (*iv*) एक गेंद जैसा

उत्तर: (*ii*) एक परिवार

9. दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए– **(1×5=5)**

किस्सा क्या हुआ था उसको उसके पद से हटाने के बाद हमने वजीर अली को बनारस पहुँचा दिया और तीन लाख रुपया सालाना वजीफ़ा मुकर्रर कर दिया। कुछ महीनों बाद गवर्नर जनरल ने उसे कलकत्ता (कोलकाता) तलब किया। वजीर अली कंपनी के वकील के पास गया जो बनारस में रहता था और उससे शिकायत की कि गवर्नर जनरल उसे कलकत्ता में क्यूँ तलब करता है। वकील ने शिकायत की परवाह नहीं की उल्टा उसे बुरा-भला सुना दिया। वजीर अली के तो दिल में यूँ भी अंग्रेज़ों के खिलाफ़ नफ़रत कूट-कूटकर भरी है उसने खंजर से वकील का काम तमाम कर दिया।

(क) वजीर अली को उसके पद से हटाकर कहाँ पहुँचा दिया गया?

(*i*) बनारस (*ii*) छत्तीसगढ़ (*iii*) रायपुर (*iv*) कहीं नहीं

उत्तर: (*i*) बनारस

(ख) वजीर अली ने किससे शिकायत की?

(*i*) ईस्ट इंडिया कंपनी के वकील से
(*ii*) कर्नल से
(*iii*) सआदत अली से
(*iv*) किसी से नहीं

उत्तर: (*i*) ईस्ट इंडिया कंपनी के वकील से

(ग) वजीर अली ने कंपनी से क्या शिकायत की?

(*i*) उसे बार-बार कोलकाता न बुलाया जाए
(*ii*) उनका वकील परेशान करता है
(*iii*) उसे कंपनी पसंद नहीं है
(*iv*) कोई नहीं

उत्तर: (*i*) उसे बार-बार कोलकाता न बुलाया जाए

(घ) वजीर अजी ने कंपनी के वकील को क्यों मारा?

(*i*) उसने वजीर को बुरा-भला कहा और उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।
(*ii*) उसने उसको मारा।
(*iii*) उसने उसको टिकट नहीं दी।
(*iv*) कोई नहीं

उत्तर: (*i*) उसने वजीर को बुरा भला कहा और उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

(ङ) वजीर अली का एकमात्र उद्देश्य क्या था?

(*i*) लूटपाट
(*ii*) मार-काट
(*iii*) अंग्रेज़ों को भारत से बाहर निकालना
(*iv*) कोई नहीं

उत्तर: (*iii*) अंग्रेज़ों को भारत से बाहर निकालना

खंड–'ब' : वर्णनात्मक प्रश्न

पाठ्य-पुस्तक एवं पूरक पाठ्य-पुस्तक [14 अंक]

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 25 से 30 शब्दों में दीजिए– (2×2=4)

(क) मीरा कृष्ण की चाकरी क्यों करना चाहती है?

उत्तर: मीरा का हृदय कृष्ण के पास रहना चाहता है। उसे पाने के लिए इतना अधीर है कि वह उनकी सेविका बनना चाहती हैं। वह बाग-बगीचे लगाना चाहती हैं जिसमें श्री कृष्ण घूमें, कुंज गलियों में कृष्ण की लीला के गीत गाएँ ताकि उनके नाम के स्मरण का लाभ उठा सके। इस प्रकार वह कृष्ण का नाम, भावभक्ति और स्मरण की जागीर अपने पास रखना चाहती हैं और अपना जीवन सफल बनाना चाहती हैं।

(ख) तताँरा वामीरो पाठ के आधार पर बताए कि रूढ़ियाँ जब बंधन के समान बोझ बन जाएँ तो उनका टूट जाना ही अच्छा है।

उत्तर: रूढ़ियाँ और बंधन समाज को अनुशासित करने के लिए बनते हैं परन्तु इन्हीं के द्वारा मनुष्य की भावना आहत होने लगे, बंधन बनने लगे और बोझ लगने लगे तो उसका टूट जाना ही अच्छा होता है। जिस प्रकार तताँरा वामीरो से प्रेम करता है, उससे विवाह करना चाहता है परन्तु गाँव के लोग तताँरा को पसंद नहीं करते हैं। वे विरोध करते हैं और अंत में उन्हें अपनी जान देनी पड़ती है। इस तरह की रूढ़ियाँ भला करने की जगह नुकसान करती हैं तो उन्हें टूट जाना समाज के लिए बेहतर है।

(ग) बड़े भाई साहब पाठ में शिक्षा के किन तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया गया है? आप उनमें क्या परिवर्तन करना चाहते हैं?

उत्तर: बड़े भाई साहब ने समूची शिक्षा प्रणाली पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि ये शिक्षा अंग्रेज़ी बोलने, लिखने, पढ़ने पर जोर देती है। आए या न आए पर उस पर बल दिया जाता है। रटने की प्रणाली पर भी जोर है। अर्थ समझ में आए न आए पर रटकर बच्चा विषय में पास हो जाता है। साथ ही अलजबरा, ज्योमेट्री निरंतर अभ्यास के बाद भी गलत हो जाती है। अपने देश के इतिहास के साथ दूसरे देश के इतिहास को भी पढ़ना पड़ता है जो ज़रूरी नहीं है। छोटे-छोटे विषयों पर लंबे चौड़े निबंध लिखने में कौन-सी चतुराई है? ऐसी शिक्षा जो लाभदायक कम और बोझ ज़्यादा हो ठीक नहीं होती है। मैं चाहता हूँ कि बच्चों को समाजोपयोगी तथा रोज़गारपरक शिक्षा दी जानी चाहिए।

11. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर 60 से 70 शब्दों में दीजिए: **(1×4=4)**

प्रकृति में हुए असंतुलन का मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है? क्या कोरोना के कारण पैदा हुई वर्तमान परिस्थितियाँ इसी असंतुलन का परिणाम हैं?

उत्तर: पर्यावरण असंतुलित होने का सबसे बड़ा कारण आबादी का बढ़ना है जिससे आवासीय स्थलों को बढ़ाने के लिए वन, जंगल यहाँ तक कि समुद्रस्थलों को भी छोटा किया जा रहा है। पशुपक्षियों के लिए स्थान नहीं है। इन सब कारणों से प्राकृतिक संतुलन बिगड़ गया है और प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ती जा रही हैं। कहीं भूकंप, कहीं बाढ़, कहीं तूफ़ान, कभी गर्मी, कभी तेज़ वर्षा इनके कारण कई बीमारियाँ हो रही हैं। इस तरह पर्यावरण के असंतुलन का जनजीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। कुछ सीमा तक कोरोना के कारण पैदा हुई वर्तमान परिस्तिथियाँ इसी असुंतलन का परिणाम हैं। लॉक डाउन के कारण सबसे सुखद परिवर्तन पर्यावरण पर हुआ। प्रदूषण कम हो गया। हवा स्वच्छ हो गयी तथा कई अन्य बीमारियों का खात्मा हुआ। प्रकृति की सुन्दरता बढ़ गयी। पक्षियों की विलुप्त होती प्रजातियों ने खुले आसमान में उड़ना शुरू कर दिया।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 40 से 50 शब्दों में दीजिए– **(3×2=6)**

(क) कहानी हरिहर काका के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने यह क्यों कहा, "अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं। ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु का वरन करने के लिए तैयार हो जाता है।

उत्तर: जब हरिहर काका के भाई हरिहर काका को धमका रहे थे तो वे बिलकुल नहीं डरे। अगर वे हरिहर काका के अपहरण से पहले उन्हें डराते तो शायद वे डर जाते। हरिहर काका समझ गए थे कि जब मनुष्य को ज्ञान नहीं होता तभी वह मृत्यु से डरता है। परन्तु जब मनुष्य को ज्ञान हो जाता है तब वह ज़रूरत पड़ने पर मृत्यु का सामना करने के लिए भी तैयार हो जाता है। हरिहर काका ने सोच लिया था कि उनके भाई उन्हें एक बार ही मार दें तो सही है, लेकिन वे ज़मीन उनके नाम लिखकर अपनी पूरी ज़िंदगी घुट-घुट कर नहीं मरना चाहते, यह उन्हें ठीक नहीं लग रहा था। हरिहर काका को अपने गाँव और इलाके के वे कुछ लोग याद आए, जिन्होंने अपनी ज़िंदगी में ही अपनी जायदाद को अपने रिश्तेदारों या किसी और के नाम लिखवा दिया था। पहले-पहले तो रिश्तेदार बहुत आदर-सम्मान करते हैं, परन्तु बुढ़ापे में परिवार वालों को दो वक्त का खाना देना भी बुरा लगने लगाता है। बाद में उनका जीवन किसी कुत्ते के जीवन की तरह हो जाता है, उन्हें कोई पूछने वाला भी नहीं होता। हरिहर काका अपनी इस तरह की हालत से अच्छा एक बार ही मर जाना सही समझते थे।

(ख) टोपी शुक्ला पाठ के आधार पर बताइए कि टोपी को किन-किन से अपनापन मिला? क्या आज के समय में भी ऐसे अपनेपन की प्राप्ति संभव है?

उत्तर: 'टोपी शुक्ला' पाठ से पता चलता है कि टोपी को अपने मित्र इफ़्फ़न, उसकी दादी और घर की नौकरानी सीता से अपनापन मिलता है। टोपी और इफ़्फ़न सहपाठी हैं जो सम-वयस्क हैं और इतने निकट आ जाते हैं कि उन्हें अपनापन मिलने लगता है। इसी प्रकार इफ़्फ़न की दादी और सीता ही इफ़्फ़न के दुख को समझती हैं और अपनत्वपूर्ण व्यवहार करती हैं। हाँ, आज के समय में भी ऐसा अपनेपन की प्राप्ति संभव है क्योंकि अपनेपन की राह में जाति, धर्म और उम्र आड़े नहीं आ सकते हैं। यह दो लोगों के सोच-विचार और व्यवहार पर निर्भर करता है।

(ग) पी.टी. मास्टर प्रीतमचंद को नौकरी से किसने और क्यों मुअत्तल कर दिया?

उत्तर: पी.टी. मास्टर प्रीतमचंद को हेडमास्टर मदनमोहन शर्मा ने नौकरी से मुअत्तल कर दिया क्योंकि कक्षा चौथी के छात्रों को उन्होंने फ़ारसी का शब्द रूप याद करने के लिए कहा था। कुछ छात्र शब्द रूप याद करके नहीं आए थे जिस कारण पी.टी. सर ने उन सभी छात्रों को मुर्गा बनने की सज़ा दी थी और उन्हें पीठ ऊँची करने का आदेश दिया था। कुछ बच्चे पीठ ऊँची न कर पाने के कारण गिर गए। हेडमास्टर जी ने यह सब अपनी आँखों से देखा। उन्हें यह सब ठीक नहीं लगा तो उन्होंने पी.टी. सर को नौकरी से मुअत्तल कर दिया।

लेखन

13. दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर संकेत-बिंदुओं के आधार पर 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए– **[26 अंक]**

(6×1=6)

(क) कंप्यूटर : एक जादुई पिटारा

• विज्ञान की अद्‌भुत खोज • बढ़ता प्रयोग • ज्ञान एवं मनोरंजन का भंडार • अधिक प्रयोग हानिकारक

विज्ञान ने मनुष्य को जो अद्‌भुत उपकरण प्रदान किए हैं उनमें प्रमुख है-कंप्यूटर। कंप्यूटर ऐसा चमत्कारी उपकरण है जो हमारी कल्पना को साकार रूप दे रहा है। जिन बातों की कल्पना कभी मनुष्य किया करता था, उन्हें कंप्यूटर पूरा कर रहा है। यह बहूपयोगी उपकरण है जिससे मनुष्य की अनेकानेक समस्याएँ हल हुई हैं। कंप्यूटर में लगा उच्च तकनीकी वाला मस्तिष्क मनुष्य की सोच से भी अधिक तेज़ी से कार्य करता है जिससे मनुष्य का समय और भ्रम दोनों ही बचने लगा है। आज कंप्यूटर का प्रयोग हर छोटे-बड़े सरकारी और गैर सरकारी कार्यालयों में किया जाने लगा है। इसका प्रयोग इतनी जगह पर किया जा रहा है कि इसे शब्दों में बाँधना कठिन है। पुस्तक प्रकाशन, बैंकों में खाते का रख-रखाव, फ़ाइलों की सुरक्षा, रेल और वायुयान के टिकटों का आरक्षण, रोगियों के आपरेशन, बीमारियों की खोज, विभिन्न परियोजनाओं के निर्माण आदि में इसका प्रयोग अत्यावश्यक हो गया है। अब तो छात्र अपनी पढ़ाई और लोग अपने व्यक्तिगत प्रयोग के लिए इसका प्रयोग आवश्यक मानने लगे हैं। कंप्यूटर पर अब पीडीएफ फॉर्म में पुस्तकें अपलोड कर दी जाती हैं। अब छात्रों को बस एक बटन दबाने की ज़रूरत है। ज्ञान का संसार कंप्यूटर की स्क्रीन पर प्रकट हो जाता है। अब उन्हें न भारी भरकम बस्ता उठाने की जरूरत है और न मोटी-मोटी पुस्तकें। इसके अलावा कंप्यूटर पर गीत सुनने, फ़िल्में देखने और गेम खेलने की सुविधा भी उपलब्ध रहती है। कंप्यूटर का अत्यधिक प्रयोग हमें आलसी और मोटापे का शिकार बनाता है। इंटरनेट के जुड़ जाने से कुछ लोग इसका दुरुपयोग करते हैं। कंप्यूटर का अधिक प्रयोग हमारी आँखों के लिए हानिकारक है। हमें कंप्यूटर का प्रयोग सोच-समझकर करना चाहिए।

(ख) बढ़ती महँगाई

• महँगाई और आम आदमी पर प्रभाव • कारण • महँगाई रोकने के उपाय • सरकार के कर्तव्य

महँगाई उस समस्या का नाम है, जो कभी थमने का नाम नहीं लेती है। मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग के साथ ही गरीब वर्ग को जिस समस्या ने सबसे ज्यादा त्रस्त किया है वह महँगाई ही है। समय बीतने के साथ ही वस्तुओं का मूल्य निरंतर बढ़ते जाना महँगाई कहलाता है। इसके कारण वस्तुएँ आम आदमी की क्रयशक्ति से बाहर होती जाती हैं और ऐसा व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताएँ तक पूरा नहीं कर पाता है। ऐसी स्थिति में कई बार व्यक्ति को भूखे पेट सोना पड़ता है। महँगाई के कारणों को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि इसे बढ़ाने में मानवीय और प्राकृतिक दोनों ही कारण ज़िम्मेदार हैं। मानवीय कारणों में लोगों की स्वार्थवृत्ति, लालच, अधिकाधिक लाभ कमाने की प्रवृत्ति, जमाखोरी और असंतोष की भावना है। इसके अलावा त्याग जैसे मानवीय मूल्यों की कमी भी इसे बढ़ाने में आग में घी का काम करती है। सूखा, बाढ़ असमय वर्षा, आँधी, तूफ़ान, ओलावृष्टि के कारण जब फ़सलें खराब होती हैं तो उसका असर उत्पादन पर पड़ता है। इससे एक अनार सौ बीमार वाली स्थिति पैदा होती है और महँगाई बढ़ती है। महँगाई रोकने के लिए लोगों में मानवीय मूल्यों का उदय होना आवश्यक है ताकि वे अपनी आवश्यकतानुसार ही वस्तुएँ खरीदें। इसे रोकने के लिए जनसंख्या वृद्धि पर लगाम लगाना आवश्यक है। महँगाई रोकने के लिए सरकारी प्रयास भी अत्यावश्यक है। सरकार को चाहिए कि वह आयात-निर्यात नीति की समीक्षा करे, जमाखोरों पर कड़ी कार्यवाही करे और आवश्यक वस्तुओं का वितरण रियायती मूल्य पर सरकारी दुकानों के माध्यम से करें।

(ग) करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान

• रचनात्मक कार्यों के लिए प्रतिभा और अभ्यास का महत्व • परिश्रम और अभ्यास एक ही सिक्के के दो पहलू • अभ्यास उन्नति का मार्ग।

यदि निरंतर अभ्यास किया जाए, तो किसी भी कठिन कार्य को किया जा सकता है। ईश्वर ने सभी मनुष्यों को बुद्धि दी है। उस बुद्धि का इस्तेमाल तथा अभ्यास करके मनुष्य कुछ भी सीख सकता है। अर्जुन तथा एकलव्य ने निरंतर अभ्यास

करके धनुर्विद्या में निपुणता प्राप्त की। उसी प्रकार वरदराज ने, जो कि एक मंदबुद्धि बालक था, निरंतर अभ्यास द्वारा विद्या प्राप्त की और ग्रंथों की रचना की। उन्हीं पर एक प्रसिद्ध कहावत बनी–

"करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरि आवत जात तें, सिल पर परत निसान।।"

यानी जिस प्रकार रस्सी की रगड़ से कठोर पत्थर पर भी निशान बन जाते हैं, उसी प्रकार निरंतर अभ्यास से मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान बन सकता है। यदि विद्यार्थी प्रत्येक विषय का निरंतर अभ्यास करें, तो उन्हें कोई भी विषय कठिन नहीं लगेगा और वे सरलता से उस विषय में कुशलता प्राप्त कर सकेंगे। कहा भी गया है कि, 'परिश्रम ही सफलता की कुँजी है।'

14. बस में यात्रा करते हुए आपका बैग टूट गया था जिसमें ज़रूरी कागज़ और रुपये थे। उसे बस कंडक्टर ने आपके घर आकर लौटा दिया। उसकी प्रशंसा करते हुए परिवहन निगम के अध्यक्ष को पत्र लिखिए। **(5×1=5)**

परीक्षा भवन
दिल्ली -11

सेवा में
परिवहन अध्यक्ष
दिल्ली परिवहन निगम,
दिल्ली

दिनांक- 20 नवम्बर, 2020

विषय: बस में छूटे बैग का वापस मिलना।

महोदय,

कल दिनांक 19 नवम्बर, 2020 को मैंने कार्य समाप्ति पर मयूर विहार के लिए आई.टी.ओ. से वातानुकूलित (एयर कंडीशनिंग) बस पकड़ी थी। सफ़र पूर्ण हो जाने के बाद मैं बस से उतर कर घर चला गया। मेरी खुशी की उस समय कोई सीमा ना रही जब तीन घंटे के बाद बस के कंडक्टर श्री रामकृष्ण शर्मा मेरे घर का पता पूछते हुए मेरे बैग के साथ मेरे घर पहुँच गए। तब तक मुझे यह ज्ञात ही नहीं था कि मैं अपना ज़रूरी बैग बस में ही भूल आया था। इस बैग में मेरे बहुत ज़रूरी कागज़, कुछ रुपये और भारत सरकार द्वारा जारी आधार कार्ड था। उसी पर लिखे पते के कारण कंडक्टर श्री रामकृष्ण शर्मा मेरे घर का पता ढूँढ़ने में सफल हुए थे। मुझे कंडक्टर का यह व्यवहार बहुत ही सराहनीय और प्रशंसनीय लगा। उनकी ईमानदारी से प्रभावित होकर मैं उन्हें कुछ ईनाम देना चाहता था परन्तु उन्होंने यह कहकर टाल दिया कि यह तो उनका कर्तव्य था। मैं चाहता हूँ कि इस तरह के ईमानदार कर्मचारियों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए जिससे दूसरे कर्मचारी भी ईमानदारी का पाठ सीख सकें। मैं कंडक्टर श्री रामकृष्ण शर्मा का फिर से आभार व्यक्त करता हूँ।

धन्यवाद।

भवदीय
क.ख.ग.

अथवा

विद्यालय में योग शिक्षा का महत्व बताते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

सेवा में,
सम्पादक महोदय,
दैनिक जागरण,
मयूर विहार
दिल्ली

दिनांक-1 नवम्बर, 2020

विषय: योग-शिक्षा का महत्त्व।

महोदय,

जन-जन की आवाज़, जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्रसिद्ध आपके पत्र के माध्यम से मैं विद्यालय में योग-शिक्षा के महत्व को बताना चाहती हूँ और प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाना चाहती हूँ। योग-शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होंगें। योग शिक्षा उनके स्वास्थय के लिए बहुत अधिक लाभदायक है। योग के माध्यम से वे अपने शरीर की नकारात्मक ऊर्जा को बाहर निकाल सकते हैं और सकारात्मक ऊर्जा को ग्रहण कर सकते हैं। योग के जरिए वे अपने तन-मन दोनों को स्वस्थ रख सकते हैं और उनके सर्वांगीण विकास में भी सहायता मिलती रहेगी।

आपसे विनम्र निवेदन है कि आप अपने समाचार-पत्र के माध्यम से पाठकों को योग के प्रति जागरूक करें और लोगों को योग-शिक्षा ग्रहण करने के लिए आग्रह करें।

धन्यवाद।

भवदीया

क.ख.ग.

15. आप भारती विद्या निकेतन, यमुना विहार, दिल्ली की छात्रा राधिका मदान हैं। विद्यालय में आपका परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम हो गया है। इस विषय पर सूचना लिखिए। **(5×1=5)**

सूचना

भारती विद्या निकेतन, यमुना विहार, दिल्ली

दिनांक : 24/07/2020

परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम हो जाना

सभी को सूचित किया जाता है कि 22/10/2020 को विद्यालय के खेल परिसर में मेरा परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम हो गया है। इस पर मेरी फोटो के साथ मेरा अनुक्रमांक 2367528 है। यदि यह किसी मिले तो मुझे लौटाने की कृपा करें।

राधिका मदान

कक्षा 10

अथवा

आपके विद्यालय में वार्षिक उत्सव में नाटक मंचन हेतु इच्छुक छात्रों को जानकारी देने हेतु एक सूचना लगभग 30-40 शब्दों में तैयार कीजिए।

सूचना

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल

दिनांक : 30-10-2020

नाटक मंचन का आयोजन

इस विद्यालय के सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय के वार्षिक उत्सव में नाटक मंचन किया जाएगा। जो भी छात्र नाटक में अभिनय करने के इच्छुक हों, वे 03 नवम्बर 2020 को अंतिम दो कक्षा (Period) में स्क्रीन टेस्ट हेतु विद्यालय के सभागार में उपस्थित रहें।

क.ख.ग.

हेड गर्ल

16. हिंदी की पुस्तकों की प्रदर्शनी में आधे मूल्य पर बिक रही महत्वपूर्ण पुस्तकों को खरीदकर लाभ उठाने के लिए लगभग 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन लिखिए। **(5×1=5)**

सेल **सुनहरा मौका/अवसर** सेल

हिंदी से जुड़े और साहित्य के शौकीन पाठकों के लिए जल्द ही मिल रहा है सुनहरा मौका। आप ही के शहर नई दिल्ली में हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन हो रहा है, जिसमें हिंदी की महत्वपूर्ण पुस्तकें आधे मूल्य पर उपलब्ध होंगी।

जल्दी कीजिए। ऐसा अवसर फिर नहीं मिलेगा।

स्थान : प्रगति मैदान, नई दिल्ली

अथवा

अपनी तीन मंज़िला मकान की विशेषताएँ बताते हुए मकान की बिक्री का विज्ञापन बनाएँ।

बिकाऊ बिकाऊ

तीन मंज़िला मकान

150 वर्ग गज से बना, 5 कमरे, 4 टॉयलेट
दो तरफ से खुला, कार पार्किंग सहित
30 फिट रोड पर

संपर्क करें : 9955882251

17. निम्नलिखित प्रस्तावना बिंदु के आधार पर 100 से 120 शब्दों में एक लघुकथा लिखिए। (5×1=5)

'घमंडी सर्दी' विषय पर 100-120 शब्दों में एक लघुकथा लिखिए।

उत्तर: एक दिन घमंडी सर्दी ने बसंत का मज़ाक उड़ाते हुए कहा-"जब तुम आते हो तो लोगों को ऐसा लगता है जैसे कोई त्योहार आ गया हो। वे पागलों की तरह अच्छे कपड़े पहनते हैं, और खुशी मनाते हैं।" इस पर पतझड़ ने बीच में टोका "लेकिन वसंत में भी उतनी ही तेज़ बारिश होती है और हवा चलती है, जितनी सर्दी में।" "लेकिन अगर मैं चाहूँ तो कई दिनों तक लोगों को उनके घरों में कैद कर सकती हूँ। मैं उन्हें कभी भी काँपने पर मजबूर कर सकती हूँ। मैं रानी हूँ, और सबको मेरा आदेश मानना होगा।"-सर्दी ने घमंड में कहा। बसंत चुपचाप सब सुन रहा था। वह बोला-"तुम्हें लोगों को परेशान करने का घमंड है। तुम उनको दुख देती हो जबकि मैं उनके चेहरों पर खुशी लाता हूँ। वे तुम्हारे बिना रह सकते हैं, परंतु मेरा वे हमेशा इंतज़ार करते हैं, और मुझसे प्यार करते हैं।" सर्दी के पास अब कोई शब्द नहीं थे और उसे अपनी भूल का एहसास हो गया था।

अथवा

'मेहनत की कमाई' विषय पर 100-120 शब्दों में एक लघुकथा लिखिए।

उत्तर: सोनू एक आलसी लड़का था। वह अपना समय यूँ ही आवारागर्दी करने में व्यतीत करता था। इस कारण वह हमेशा कार्य करने से जी चुराता था। एक दिन उसे पैसों से भरा एक थैला मिला। वह अपने भाग्य पर बहुत खुश हुआ। वह यह सोच-सोचकर खुश हो रहा था कि उसे बिना प्रयास के ही इतने सारे पैसे मिल गए। सोनू ने कुछ पैसों से मिठाई खरीदी, कुछ पैसों से कपड़े व अन्य सामान खरीदा। इस प्रकार उसने पैसों को व्यर्थ खर्च करना प्रारंभ कर दिया। तब उसकी माँ बोली, "बेटा, पैसा यूँ बर्बाद न करो। इस पैसे का उपयोग किसी व्यवसाय को शुरू करने में करो।" सोनू बोला, "माँ, मेरे पास बहुत पैसा है। इसलिए मुझे कार्य करने की कोई आवश्यकता ही नहीं है।" धीरे-धीरे सोनू ने सारा पैसा खर्च कर दिया। अब उसके पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी। इस तरह वह एक बार फिर अपनी उसी स्थिति में आ गया। सोनू को एहसास हुआ कि यदि उसने वह धन परिश्रम से कमाया हुआ होता तो उसने अवश्य उसकी कद्र और उपयोगिता समझी होती।